अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : ग्यारहवीं – जैन सिद्धान्त रत्नाकर (परीक्षा 17 जुलाई, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) क्षमापना से जीव को प्राप्त होता है-
(क) पाप कर्म की विशुद्धि (ख) चित्त की प्रसन्नता
(ग) देवलोक (घ) दर्शन विशुद्धि (ख)

(b) कषाय के प्रत्याख्यान से जीव प्राप्त करता है-
(क) संवर (ख) सामायिक
(ग) सर्वविरति (घ) वीतराग भाव (घ)

(c) शल्य नहीं है-
(क) निदान (ख) माया
(ग) प्राणातिपात (घ) मिथ्या दर्शन (ग)

(d) अपुरस्कार के समानार्थक शब्द नहीं है-
(क) गौरवहीनता (ख) ग्लानिभाविता
(ग) आत्मलघुता (घ) आत्म विनम्रता (ख)

(e) इच्छाओं का निरोध प्राप्त होता है-
(क) अनशन से (ख) स्वाध्याय से
(ग) प्रत्याख्यान से (घ) शील से (ग)

(f) त्याग पथ अपनाने पर भी भोगों की ओर रूचि होना-
(क) समादान क्रिया (ख) कायिकी क्रिया
(ग) दर्शन क्रिया (घ) मिथ्यात्व क्रिया (क)

(g) प्राणिमात्र पर करुणा बुद्धि से दया रखना अनुकम्पा है-
(क) व्रती (ख) भूत
(ग) करुणा (घ) दान (ख)

(h) चतुर्गति रूप संसार को दुःखमय जानकर उससे भयभीत होना है-
(क) आस्था (ख) अनुकम्पा
(ग) निर्वेद (घ) संवेग (घ)

(i) बुद्धि शब्द का द्वितीया विभक्ति का बहुवचन का रूप नहीं है-
(क) बुद्धिओ (ख) बुद्धिउ
(ग) बुद्धिए (घ) बुद्धि (ग)

(j) नमो के योग में विभक्ति होती है-
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी
(ग) पंचमी (घ) सप्तमी (ख)

(k) आरम्भ में .....नहीं है। वाक्य की पूर्ति का शब्द है-
(क) हिंसा (ख) समारंभ
(ग) संवर (घ) दया (घ)

(l) अगुरुलघु चतुष्क की प्रकृति नहीं है-
(क) उपघात (ख) उच्छ्वास
(ग) निर्माण (घ) पराघात (ग)

(m) यशकीर्तिनाम कर्म का बंध होता है-
(क) आठवें गुणस्थान तक (ख) नवें गुणस्थान तक
(ग) दसवें गुणस्थान तक (घ) दूसरे गुणस्थान तक (ग)

(n) अपर्याप्त नाम कर्म का बंध होता है-
(क) पहले गुणस्थान तक (ख) दूसरे गुणस्थान तक
(ग) आठवें गुणस्थान तक (घ) चौथे गुणस्थान तक (क)

(o) उपशम समकित वाला इस गुणस्थान से गिरकर दूसरे गुणस्थान में नहीं आता-
(क) सातवें से (ख) छठे से
(ग) पाँचवें से (घ) चौथे से (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) अविसंवाद सम्पन्नता से जीव धर्म का विराधक होता है। (नहीं)

(b) योग निरोध करता हुआ जीव सर्वप्रथम काय योग का निरोध करता है। (नहीं)

(c) मैत्रीभाव को प्राप्त जीव भाव विशुद्धि करके भयभीत हो जाता है। (नहीं)

(d) ज्ञान सम्पन्नता से शैलेशी भाव प्राप्त होता है। (नहीं)

(e) आत्मा का विषयों से विमुख होना विनिवर्तना है। (हाँ)

(f) रात्रि भोजन विरमण व्रत का समावेश अहिंसा व्रत में होता है। (हाँ)

(g) असद् की स्थापना करना स्तेय है। (नहीं)

(h) माध्यस्थ भावना का विषय दुःखीजन है। (नहीं)

(i) भय के कारण में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। (नहीं)

(j) 'कन्द धातु' रोने अर्थ में प्रयुक्त होती है। (हाँ)

(k) श्वेताम्बर परम्परा जम्बू स्वामी के मोक्षगमन के साथ जिनकल्प का विच्छेद मानती है। (हाँ)

(l) धर्म के नाम पर की गयी हिंसा को स्थानकवासी परम्परा मान्य करती है। (नहीं)

(m) दया भाव से गरीबों को दान देना पाप नहीं है, अपितु पुण्य का कारण है। (हाँ)

(n) निद्रा-निद्रा कर्म का उदय देवताओं में नहीं होता है। (हाँ)

(o) आतप नामकर्म का उदय पहले और दूसरे गुणस्थान में ही संभव है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	स्पर्श करके	(क) निव्वेएणं	फासित्ता
(b)	सरलता	(ख) अणुब्भडे	अज्जवे
(c)	उत्कृष्ट	(ग) तीर्थंकर नामकर्म	अनुत्तरं
(d)	वैराग्य को	(घ) प्रथम गुणस्थान	निव्वेएणं
(e)	निष्पन्न	(च) फासित्ता	निव्वत्तेइ
(f)	गुणों का प्रकाशन	(छ) निव्वत्तेइ	संजलण
(g)	ढाँकता है	(ज) अज्जवे	पिहेइ
(h)	व्यवदान को	(झ) अनुत्तरं	वोदाणं
(i)	अहंकार से रहित	(य) आययट्ठिया	अणुब्भड
(j)	मोक्षार्थ	(र) वज्रऋषभनाराच संहनन	आययट्ठिया
(k)	संयम सापेक्ष	(ल) वोदाणं	आहारक शरीर
(l)	नरक प्रायोग्य बंध	(व) आहारक शरीर	प्रथम गुणस्थान
(m)	आनुपूर्वी नाम कर्म का उदय	(क्ष) पिहेइ	बाटा बहती अवस्था
(n)	क्षपक श्रेणि	(त्र) बाटा बहती अवस्था	वज्रऋषभनाराच संहनन
(o)	सम्यक्त्व सापेक्ष	(ज्ञ) संजलण	तीर्थंकर नाम कर्म

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a)	मेरे विजय से संतोष गुण की प्राप्ति होती है।	लोभ
(b)	मैं कांक्षा मोहनीय कर्म को विच्छिन्न करने का साधन हूँ।	प्रतिपृच्छना
(c)	मुझसे अनुत्तर धर्म श्रद्धा प्राप्त होती है।	संवेग
(d)	वैयावृत्य से जीव मेरा बन्ध करता है।	तीर्थंकर नाम गौत्रकर्म
(e)	मैं कषाय के अभाव में गमना-गमनादि क्रियाओं के द्वारा बांधे जाने वाला कर्म हूँ।	ईर्यापथ कर्म
(f)	मैं अनुग्रह के लिए अपनी किसी वस्तु का त्याग करने पर होता हूँ।	दान
(g)	मैं मर्यादित सीमा से बाहर वस्तु को भेजता हूँ।	प्रेष्य प्रयोग
(h)	मैं इस लोक सम्बंधी और परलोक सम्बंधी विषयों की अभिलाषा हूँ।	कांक्षा
(i)	आर्ष प्रयोगों में सप्तमी विभक्ति के स्थान पर मेरा प्रयोग पाया जाता है।	तृतीया विभक्ति
(j)	मैं छः काय जीवों की विराधना टालकर धार्मिक अनुष्ठान को सम्पन्न कराने का स्थान हूँ।	स्थानक
(k)	मैं आत्मोत्थान के लिए व्रतों को ग्रहण करता हूँ।	भाव तीर्थ
(l)	मेरी सत्ता सास्वादन एवं मिश्र गुणस्थान वालों को प्राप्त नहीं होती है।	जिननाम कर्म
(m)	मेरा बन्ध दूसरे तथा उदय पाँचवें गुणस्थान तक होता है।	नीच गौत्र
(n)	मैं मोहनीय कर्म की प्रकृति हूँ, मेरा उदय विच्छेद 7वें गुणस्थान के अंतिम समय में होता है।	सम्यक्त्व मोहनीय
(o)	तीसरे गुणस्थान में मेरा बन्ध नहीं होता है।	आयु

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2 = (16)**

(a) जीव लोकप्रियता को किस क्रम से प्राप्त करता है ?

उ. 1. वन्दना करने से जीव नीचगोत्रकर्म का क्षय करता है, 2. उच्च गोत्रकर्म का बंध करता है, 3. अप्रतिहत सौभाग्य को प्राप्त करता है, 4. आज्ञा का प्रतिफल प्राप्त करता है तथा 5. लोकप्रियता को प्राप्त करता है।

(b) उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्ययन में ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय के दो साधनों के नाम लिखिए।

उ. 1. स्वाध्याय से 2. काल की प्रतिलेखना से

(c) केवल ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् होने वाले शुक्लध्यान के भेदों के नाम लिखिए।

उ. 1. सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाती 2. समुच्छिन्नक्रियाऽनिवृत्ति

(d) मनगुप्ति से जीव क्या प्राप्त करता है ?

उ. मनगुप्ति से जीव मन की एकाग्रता को प्राप्त करता है।

(e) नीच गोत्र कर्म के बन्ध हेतु लिखिए।

उ. परनिन्दा, आत्म-प्रशंसा, सद्‌गुणों को ढाँकना, असद्‌गुणों को प्रकट करना।

(f) अनुवीचि भाषण भावना को लिखिए।

उ. पापरहित एवं शास्त्र मर्यादा सहित विचारपूर्वक वचन बोलने की भावना रखना।

(g) 'साहु' शब्द के षष्ठी-सप्तमी विभक्ति के एकवचन बहुवचन रूप लिखिए।

उ. षष्ठी- साहुस्स,साहूण।
सप्तमी- साहुम्मि, साहूसु।

(h) श्वेताम्बर एवं दिगम्बर मूर्ति में क्या-क्या अन्तर हैं ?

उ. श्वेताम्बर सवस्त्र मर्तियों की पूजा-प्रतिष्ठा में विश्वास करता है तो दिगम्बर नग्न मर्तियों की पूजा प्रतिष्ठा में विश्वास करता है।
श्वेताम्बर मूर्ति-आभूषण से युक्त एवं खुली आंखों वाली होती है, जबकि दिगम्बर मूर्ति-आभूषण से रहित एवं बंद आँखों वाली होती है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : -(कोई आठ) **8x3 = (24)**

(a) सर्वगुण सम्पन्नता से जीव को क्या प्राप्त होता है ?

उ. सर्व-गुण-सम्पन्नता से जीव पुनः (संसार में) आगमन के अभाव- मोक्ष को प्राप्त करता है और अपुनरावृत्ति को प्राप्त जीव शारीरिक और मानसिक दुःखों को भोगने वाला नहीं होता।

(b) उपधि के प्रत्याख्यान से जीव को क्या प्राप्त होता है ?

उ. उपधि के प्रत्याख्यान से अपरिमन्थ (स्वाध्याय-ध्यान में निर्विघ्नता) प्राप्त कर लेता है। उपधि रहित जीव आकांक्षा से मुक्त होकर फिर संक्लेश नहीं पाता है।

(c) बाह्य कर्मबन्ध के कारण समान होने पर भी कर्म बन्ध में भिन्नता के कारण लिखिए।

उ. 1.परिणाम की तीव्रता एवं मन्दता
2. ज्ञातभाव एवं अज्ञातभाव
3. वीर्य या शक्तिविशेष
4.जीव-अजीव रूप अधिकरण की विशेषता।

(d) 'योग-दुष्प्रणिधानानादर-स्मृत्युपस्थापनानि' सूत्र का अर्थ लिखिए।

उ. काय दुष्प्रणिधान, वचन दुष्प्रणिधान, मन दुष्प्रणिधान, अनादर और स्मृति का अनुस्थापन, ये पाँच सामायिक व्रत के अतिचार हैं।

(e) 'ठा' धातु के भूतकाल के रूप लिखिए।

उ.

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्रथम	ठासी, ठाही, ठाहीअ	ठासी, ठाही, ठाहीअ
मध्यम	ठासी, ठाही, ठाहीअ	ठासी, ठाही, ठाहीअ
उत्तम	ठासी, ठाही, ठाहीअ	ठासी, ठाही, ठाहीअ

(f) किसके द्वारा कौनसी रचनाएँ आगम रूप में मान्य की गई है ?

उ. 10 पूर्वी तक की सारी रचनाएँ आगम हैं। 10 पूर्वी से 1 पूर्वी तक की वही रचना स्वीकार होगी जो आगम से विरोधी न हो। 1 पूर्वी के बाद के कोई ग्रन्थ आगम नहीं। वीर निर्वाण संवत् 1000 के बाद का कोई ग्रन्थ आगम रूप में मान्य नहीं है।

(g) उदीरणा के लिए अनिवार्य तीन बातें लिखिए।

उ. 1. उदीरणा योग्य कर्म-प्रकृति का विपाकोदय चालू हो।
2. उस कर्म-प्रकृति की स्थिति सत्ता में एक आवलिका से अधिक हो।
3. योगों की प्रवृत्ति विद्यमान हो।

(h) क्षपक श्रेणि में 9वें गुणस्थान के दूसरे भाग में सत्ता विच्छेद योग्य 16 प्रकृतियों के नाम लिखिए।

उ. स्थावरद्विक, तिर्यंचद्विक, नरकद्विक, आतप, उद्योत, स्त्यानर्द्धित्रिक, एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रियत्रिक, साधारण नामकर्म।

(i) जहा सूई ससुत्ता, पडिया वि न विणस्सइ।

उ. तहा जीवे ससुत्ते, संसारे न विणस्सइ।। इस गाथा का अर्थ लिखिए।
जिस प्रकार सूत्र (धागे) सहित सूई कहीं गिर जाने पर भी विनष्ट नहीं होती, खो नहीं जाती, उसी प्रकार ससूत्र (शास्त्रज्ञान-सहित) जीव संसार में विनष्ट नहीं होता।

कक्षा : ग्यारहवीं – जैन सिद्धान्त रत्नाकर (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1=(10)**

(a) 'पत्तिइत्ता' शब्द का अर्थ है -
(क) प्राप्त करके (ख) त्याग करके
(ग) प्रवेश करके (घ) प्रतीति करके (घ)

(b) सम्यक्त्व पराक्रम के 73 सूत्रों में से 26वाँ सूत्र है-
(क) वंदणे (ख) संजमे
(ग) पायच्छित्त (घ) कसाय पच्चक्खाणे (ख)

(c) किससे जीव सातावेदनीय-कर्मजन्य विषय सुखों की आसक्ति से विरक्त हो जाता है-
(क) धर्मश्रद्धा (ख) आलोचना
(ग) चतुर्विंशति स्तव (घ) वंदना (क)

(d) काल की प्रतिलेखना से किस कर्म का क्षय करता है -
(क) ज्ञानावरणीय (ख) दर्शनावरणीय
(ग) मोहनीय (घ) अन्तराय (क)

(e) तत्त्वार्थ सूत्र किस जगत में अपना विशिष्ट स्थान रखता है -
(क) व्यावहारिक (ख) दार्शनिक
(ग) शैक्षणिक (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(f) साम्परायिक कर्माश्रव के भेद हैं -
(क) 29 (ख) 39
(ग) 49 (घ) 59 (ख)

(g) अनन्तानुबन्धी कषाय का बन्ध कौनसे गुणस्थान तक होता है-
(क) 1 (ख) 2
(ग) 4 (घ) 6 (ख)

(h) आनुपूर्वी का उदय कौनसे गुणस्थानों में होता है-
(क)1,2,4 (ख) 1,2,5
(ग) 1,2,3 (घ) 1,4,6 (क)

(i) कौनसे आगम में मुनियों को एक वस्त्र, दो वस्त्र अथवा तीन वस्त्र पात्र आदि रखने तथा साध्वियों को चार वस्त्र रखने का विधान किया गया है-
(क) भगवती (ख) अंतगडदसा
(ग) आचारांग (घ) प्रश्नव्याकरण (ग)

(j) 'गिरि' शब्द का तृतीया विभक्ति बहुवचन रूप बनता है-
(क) गिरी (ख)गिरीहि
(ग) गिरिहि (घ) गीरीहि (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) प्रतिपृच्छना से जीव कांक्षा मोहनीय कर्म को विच्छिन्न कर देता है। (हाँ)
(b) संयम से जीव व्यवदान(विशुद्धि) को प्राप्त करता है। (नहीं)
(c) अप्रतिबद्धता से जीव संगता को प्राप्त करता है। (नहीं)
(d) सद्भाव प्रत्याख्यान से अनिवृत्ति रूप धर्मध्यान के चतुर्थ भेद की प्राप्ति होती है। (नहीं)
(e) त्याग पथ अपनाने पर भी भोगों की ओर रुचि होना समादान क्रिया है। (हाँ)
(f) धन-सम्पत्ति एवं स्वजन-परिजन के प्रति तीव्र ममत्व एवं आसक्ति का भाव बहुआरम्भ है। (नहीं)
(g) असाता का बंध प्रमादी, अप्रमादी दोनों के होता है। (नहीं)
(h) अवेदी में नवमें से लेकर चौदहवें गुणस्थान तक होते हैं। (हाँ)
(i) आत्मोत्थान के लिए व्रतों को ग्रहण करना भाव तीर्थ है। (हाँ)

(j) आर्ष प्रयोगों में पंचमी के स्थान पर तृतीया का प्रयोग पाया जाता है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) मुझ पर विजय पाने पर जीव को क्षमाभाव प्राप्त होता है। क्रोध

(b) मुझ पर विजय पाने पर जीव ज्ञान दर्शन चारित्र की आराधना के लिये उद्यत होता है। प्रेय (राग), द्वेष और मिथ्यादर्शन

(c) मेरे सेवन से चारित्र-गुप्ति अर्थात् चारित्र-रक्षा उपलब्ध होती है। विविक्त शयनासन

(d) मेरे आने से जीव विविक्त शयनासन के सेवन से अकिंचनता को प्राप्त करता है। विनिवर्तना

(e) मैं कुशील सेवन की प्रवृत्ति हूँ। अब्रह्म

(f) शंका, कांक्षा, विचिकित्सा आदि मेरे अतिचार हैं। सम्यग्दर्शन

(g) मैं निर्ग्रन्थों द्वारा प्ररूपित धर्म हूँ। निर्ग्रन्थ धर्म

(h) मैं प्राकृत भाषा की वह क्रिया हूँ, जिसका हिन्दी-अर्थ अच्छा लगाना होता है। रोअ

(i) मैं वह गुणस्थान हूँ, जिसमें किसी भी आयु का बंध नहीं होता। तीसरा/आठवाँ से चौदहवाँ

(j) मैं वह गुणस्थान हूँ, जिसमें 87 उत्तर प्रकृतियों की उदीरणा सम्भव है। पाँचवा

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2=(28)**

(a) शरीर के प्रत्याख्यान से जीव किस गुण को प्राप्त करता है ?

उ. शरीर प्रत्याख्यान से सिद्धों के अतिशय गुणत्व का सम्पादन कर लेता है और सिद्धों के अतिशय गुणों से संपन्न जीव लोक के अग्रभाग में पहुँचकर परमसुखी हो जाता है।

(b) ऋजुता से जीव को क्या प्राप्त होता है ?

उ. ऋजुता से काया की सरलता, भावों की सरलता, भाषा की सरलता और अविसंवादिता को प्राप्त करता है तथा अविसंवाद संपन्नता से जीव धर्म का आराधक होता है।

(c) दुःख एवं शोक में क्या अन्तर है?

उ. बाह्य अथवा आन्तरिक कारण से होने वाली पीड़ा दुःख है जबकि इष्ट-वियोग अथवा अनिष्ट-संयोग से होने वाली चिन्ता मानसिक शोक है।

(d) अवर्णवाद किसे कहते हैं ?

उ. किसी व्यक्ति या वस्तु में जो दोष विद्यमान नहीं हो वैसे मनगढ़न्त दोष लगाकर उस व्यक्ति या वस्तु की बुराई करना, अपयश फैलाना अवर्णवाद कहलाता है।

(e) मैत्री, प्रमोद, कारुण्य एवं मध्यस्थ भावना के विषय क्या-क्या हैं ?

उ. मैत्री भावना का विषय- 'प्राणिमात्र', प्रमोद भावना का विषय- 'गुणीजन' कारुण्य भावना का विषय दुःखीजन और माध्यस्थ भावना का विषय- 'अयोग्यपात्र' है।

(f) स्तेन प्रयोग एवं स्तेनाहृतादान से क्या तात्पर्य है ?

उ. स्तेन प्रयोग से तात्पर्य चोरी के उपाय बतलाना या प्रेरणा देना है।
स्तेनाहृतादान से तात्पर्य चोरी की वस्तु लेना या खरीदना है।

(g) दसवें गुणस्थान में कौन-कौनसी मूल एवं उत्तर प्रकृतियों का बंध होता है ?

उ. दसवें गुणस्थान में मूल 6 और 17 निम्न उत्तर प्रकृतियों का बन्ध होता है-
ज्ञानावरणीय-5, दर्शनावरणीय-4,सातावेदनीय-1, उच्चगोत्र-1, अन्तराय-5, यशःकीर्तिनाम-1

(h) ग्यारहवें गुणस्थान में कौन-कौनसी मूल एवं उत्तर प्रकृतियों का बंध-विच्छेद होता है ?

उ. ज्ञानावरणीय की 5, दर्शनावरणीय की-4, अन्तराय की-5, उच्चगोत्र, यशकीर्ति नाम, इन 16 प्रकृतियों का बंध विच्छेद होता है।

(i) सातवें गुणस्थान में किन-किन मूल एवं उत्तर प्रकृतियों की उदीरणा सम्भव है ?

उ. सातवें गुणस्थान में मूल 6 एवं उत्तर 73 प्रकृतियों की उदीरणा सम्भव है। वेदनीयद्विक,

आहारकद्विक, स्त्यानर्द्धित्रिक, मनुष्यायु = 8, सातवें गुणस्थान में इन 8 प्रकृतियों की उदीरणा रूक जाने से 81-8 = 73 प्रकृतियों की उदीरणा होती है।

(j) बारहवें गुणस्थान में कौनसी मूल एवं उत्तर प्रकृतियों की सत्ता संभव है ?

उ. बारहवें गुणस्थान के प्रारम्भ में मूल 7 कर्मों की, 101 उत्तर प्रकृतियों की तथा चरम समय में निद्रा व प्रचला को छोड़कर 99 उत्तर प्रकृतियों की सत्ता रहती है।

(k) 'स्थानक' शब्द का अर्थ समझाइए।

उ. स्थानक पौषध, संवर, सामायिक आदि धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करने का स्थान है। स्थानक में वर्ण, गंध, रस, स्पर्श आदि इन्द्रिय पोषक विषय का स्थान न होने से वैराग्य की ओर प्रवृत्त कराने वाली और संसार तारक क्रियाएँ सुगमता पूर्वक शुद्ध रूप में होती हैं।

(l) सर्व सावद्य योग से विरत ही वंदनीय-पूजनीय होता है, इसे दशवैकालिक अध्ययन 6 के अनुसार समझाइए।

उ. दशवैकालिक अध्ययन-6 में वर्णितानुसार- श्रमणाचार के अठारह स्थानों का यथावत पालन करने वाले, साज-श्रृंगार से रहित जीवादि तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप के ज्ञाता, भगवान की आज्ञा में सदा रत रहने वाले छह काय के रक्षक, सावद्य योग से विरत ही वंदनीय पूजनीय है।

(m) प्राकृत में अनुवाद कीजिए-

उ. मधु आँख से काणा है। महु नेत्तेण काणो।
शांति के लिये ध्यान करता है। सन्तीअ झाइ।

(n) प्राकृत में अनुवाद कीजिए-

उ. चोर से डरता है। चोरत्तो बीहइ।
वह पाठशाला जाएगी सा पाठसालं गच्छिहिइ।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **14x3 = (42)**

(a) केवलज्ञान-प्राप्ति के बाद शैलेषी अवस्था कैसे प्राप्त होती है?

उ. केवल ज्ञान प्राप्ति के बाद शेष आयु कर्म को भोगकर जब अन्तर्मुहूर्त्तकाल परिमित आयु शेष रहती है, तब अनगार योग का निरोध करता हुआ सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाती नामक शुक्ल ध्यान को ध्याता हुआ क्रमशः मन, वचन, काय योग, श्वासोच्छ्वास का निरोध करके चार कर्मांशों का एक साथ क्षय कर देता है।

(b) प्रतिरूपता से जीव किस गुण को प्राप्त करता है तथा उसके प्राप्त होने पर क्या होता है?

उ. प्रतिरूपता से जीव लघुता प्राप्त करता है। लघुभाव को प्राप्त जीव प्रमाद रहित प्रगट लिंगवाला, प्रशस्त लिंगवाला, विशुद्ध सम्यक्त्वी, सत्व और समिति से परिपूर्ण समस्त प्राण, भूत, जीव और सत्त्वों के लिये विश्वसनीय रूप वाला, अल्प प्रतिलेखन वाला, जितेन्द्रिय और विपुल तप एवं समिति से समन्वित भी हो जाता है।

(c) विनिवर्तना से जीव किस गुण को प्राप्त करता है ?

उ. विनिवर्तना से जीव पाप कर्मों को न करने के लिये उद्यत रहता है और पूर्वबद्ध पापकर्मों की निर्जरा से उसको क्षय करके उनसे निवृत्ति पा लेता है। तत्पश्चात् चतुर्गतिक संसार रूपी अरण्य (वन) को अतिक्रमण कर जाता है।

(d) सुख-शात से जीव को क्या प्राप्त होता है?

सुख-शात से विषयों के प्रति अनुत्सुकता उत्पन्न होती है, इससे जीव अनुकम्पा करने वाला, अहंकार से रहित, शोकरहित होकर चारित्र मोहनीय कर्म का क्षय कर डालता है।

(e) संभोग प्रत्याख्यान से जीव को क्या प्राप्त होता है ?

संभोग प्रत्याख्यान से आलम्बनों को समाप्त कर देता है। निरावलम्बी के मन-वचन-काया मोक्षार्थ हो जाते हैं। स्वयं के द्वारा अर्जित लाभ से वह संतुष्ट रहता है।

(f) वीतरागता से जीव को क्या प्राप्त होता है ?

वीतरागता से स्नेहानुबन्धनों और तृष्णानुबंधनों का विच्छेद हो जाता है। फिर वह मनोज्ञ और अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध से तथा सचित्त-अचित्त और मिश्रद्रव्यों से विरक्त हो जाता है।

(g) सर्वगुणसम्पन्नता से जीव क्या प्राप्त करता है ?

सर्वगुणसम्पन्नता से साधक पुनः (संसार में) आगमन के अभाव-मोक्ष को प्राप्त करता है और शारीरिक और मानसिक दुःखों को भोगनेवाला नहीं होता।

(h) भाव सत्य से जीव को किस गुण की प्राप्ति होती है ?

भाव सत्य से जीव भाव-विशुद्धि प्राप्त करता है, इसमें प्रवर्तमान जीव अर्हत् प्रज्ञप्त धर्म की आराधना के लिये उद्यत होता है तथा परलोक-धर्म का आराधक होता है।

(i) भूतव्रत्यनुकम्पा दानं सरागं संयमादि योगः क्षान्ति शौचमिति सद्वेद्यस्य। सूत्र का अर्थ लिखिए।

भूत-अनुकम्पा, व्रती अनुकम्पा, दान, सराग संयमादि योग, क्षमा और पवित्रता, ये सातावेदनीय कर्मबन्ध के हेतु हैं।

(j) विपरीतं शुभस्य। सूत्र का अर्थ लिखिए।

विपरीत अर्थात् अशुभनामकर्म के हेतु के विपरीत मन, वचन व काय योग की सरलता एवं विसंवाद रहितता, शुभनाम कर्म के बन्ध हेतु हैं।

(k) दूसरे गुणस्थान में किन-किन मूल एवं उत्तर प्रकृतियों का बंध सम्भव है?

दूसरे गुणस्थान में 8 मूल तथा 101 उत्तर प्रकृतियों का बंध सम्भव है। नरकत्रिक, जातिचतुष्क, स्थावरचतुष्क, हंडसंस्थान, सेवार्तसंहनन, आतपनाम, नपुंसकवेद, मिथ्यात्वमोहनीय =16 प्रकृतियों का बंध विच्छेद मिथ्यात्व गुणस्थान के अंत में हो जाने से 101 का बंध संभव है।

(l) तीसरे गुणस्थान में किन-किन मूल एवं उत्तर प्रकृतियों का उदय सम्भव है?

उ. तीसरे गुणस्थान में 8 मूल तथा 100 उत्तर प्रकृतियों का उदय सम्भव है। अनन्तानुबंधीचतुष्क, स्थावरनाम, एकेन्द्रिय जाति, विकलेन्द्रियत्रिक, तिर्यंचानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, देवानुपूर्वी =12 प्रकृतियों का उदय नहीं होता, किन्तु मिश्रमोहनीय का उदय होता है। दूसरे गुणस्थान में उदय योग्य 111 प्रकृतियों में से ये 12 घटाने से तथा 1 जोड़ने से, इस प्रकार 111-12+1 = 100 प्रकृतियों का उदय रहता है।

(m) 'आरम्भे णत्थि दया' का आशय स्थानकवासी परम्परा के अनुसार स्पष्ट कीजिए।

उ. आरम्भ में दया नहीं। धर्म के नाम पर हिंसा को कोई स्थान नहीं है। सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। सब में समान आत्मा है। एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक किसी भी जीव की हिंसा न हो इसका विशेष खयाल रखने का उपदेश भगवान ने शास्त्रों में स्थान-स्थान पर दिया है। अतः धर्म के नाम पर धूप, दीप, अगरबत्ती, सचित्त फूल, पानी आदि का उपयोग करना निषिद्ध है।

(n) 'साहु' शब्द के द्वितीया, तृतीया एवं षष्ठी विभक्ति के रूप लिखिए।

उ.

विभक्ति-	एकवचन	बहुवचन
द्वितीया	साहुं	साहुणो, साहू
तृतीया	साहुणा	साहूहि
षष्ठी	साहुस्स	साहूण

कक्षा : ग्यारहवीं – जैन सिद्धान्त रत्नाकर (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) सम्यक्त्व पराक्रम का अंतिम फल है-
(क) संयम की प्राप्ति (ख) केवल ज्ञान
(ग) वैराग्य (घ) मोक्ष प्राप्ति (घ)

(b) 'अणुप्पेहा शब्द का अर्थ है-
(क) अणुव्रत (ख) अनुशासन
(ग) अनुप्रेक्षा (घ) अनुपेठा (ग)

(c) वन्दना से जीव किस गुण को प्राप्त करता है-
(क) नीच गोत्र कर्म का क्षय (ख) उच्च गोत्र कर्म का बंध
(ग) अप्रतिहत सौभाग्य (घ) उपर्युक्त सभी (घ)

(d) ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है-
(क) काल प्रतिलेखना से (ख) स्वाध्याय करने से
(ग) दोनों से (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(e) तप से जीव को किस गुण की प्राप्ति होती है-
(क) वोदाण (ख) मोक्ष
(ग) ज्ञान (घ) धन (क)

(f) आश्रव है-
(क) योग (ख) उपयोग
(ग) ज्ञान (घ) दान (क)

(g) जीव भावाधिकरण के भेद होते हैं-
(क) 108 (ख) 39
(ग) 42 (घ) 25 (क)

(h) मैत्री भावना का विषय है-
(क) गुणीजन (ख) प्राणिमात्र
(ग) दुःखीजन (घ) अयोग्य पात्र (ख)

(i) सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान में प्रकृतियों का बंध होता है-
(क) 10 (ख) 20
(ग) 17 (घ) 22 (ग)

(j) सातावेदनीय कर्म का बंध किस गुणस्थान तक होता है-
(क) छठे (ख) दसवें
(ग) बारहवें (घ) तेरहवें (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) असातावेदनीय कर्म का बंध छठे गुणस्थान तक होता है। (हाँ)
(b) देवायु का बंध चौथे गुणस्थान तक होता है। (नहीं)
(c) ''मित्रानुराग'' संलेखना व्रत का अतिचार है। (हाँ)
(d) शीलरहितता एवं व्रत रहितता चारों आयुओं के बंध हेतु हैं। (हाँ)
(e) 'बीसपंथी' दिगम्बर सम्प्रदाय का एक भाग है। (हाँ)
(f) ''स्त्रीणां न तद्भवे मोक्षः'' यह कथन श्वेताम्बर मत का है। (नहीं)
(g) निंदना से जीव संवेग को प्राप्त करता है। (नहीं)
(h) चतुर्विंशति स्तव से जीव के दर्शन-विशुद्धि की प्राप्ति होती है। (हाँ)
(i) वैयावृत्य से जीव विनय गुण को प्राप्त करता है। (नहीं)
(j) क्षान्ति से जीव परीषहों को जीतता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	बंध योग प्रकृतियाँ	(क) सत्यव्रत	120
(b)	लच्छी	(ख) संतोष	लक्ष्मी
(c)	सुविहित परम्परा	(ग) अनाश्रवपन	आगम मर्यादानुसार
(d)	एकान्त अवेदी में गुणस्थान	(घ) भाव विशुद्धि	5
(e)	अनुवीचि भाषण	(च) शैलेशी भाव	सत्यव्रत
(f)	आत्म प्रशंसा	(छ) आगम मर्यादानुसार	नीच गोत्र
(g)	लोभ विजय	(ज) लक्ष्मी	संतोष
(h)	चारित्र सम्पन्नता	(झ) 120	शैलेशी भाव
(i)	भाव सत्य	(य) 5	भाव विशुद्धि
(j)	संयम	(र) नीच गोत्र	अनाश्रवपन

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a)	मेरी आराधना से जीव अज्ञान का क्षय करता है।	श्रुत
(b)	मेरा प्रत्याख्यान करने से जीव वीतराग भाव को प्राप्त करता है।	कषाय
(c)	मुझ पर विजय प्राप्त करने पर जीव सरलता को प्राप्त करता है।	माया
(d)	मेरी प्रतिलेखना से जीव ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय करता है।	काल
(e)	मैं पाँचों व्रतों में प्रधान व्रत हूँ।	अहिंसा
(f)	मैं तिर्यंचायु बंध का प्रमुख कारण हूँ।	स्त्रीवेद
(g)	मैं एक वेद हूँ, मेरा बंध दूसरे गुणस्थान तक होता है।	माया
(h)	मेरा बंध सम्यक्त्व सापेक्ष है तथा चौथे से आठवें गुणस्थान तक होता है।	तीर्थंकर नाम
(i)	मैं तीर्थंकर की अर्थ रूप देशना को सूत्र रूप में गूँथता हूँ।	गणधर
(j)	मैं एक कारक हूँ, मुझमें तृतीय विभक्ति होती है।	करण कारक

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए:- **12x2=(24)**

(a) उपधि प्रत्याख्यान से जीव क्या प्राप्त करता है ?

उ. उपधि के प्रत्याख्यान से अपरिमन्थ (स्वाध्याय-ध्यान में निर्विघ्नता) प्राप्त कर लेता है। उपधि-रहित जीव आकांक्षा से मुक्त होकर उपधि के बिना फिर संक्लेश नहीं पाता।

(b) जीव व्यंजन लब्धि कैसे प्राप्त करता है ?

उ. परिवर्त्तना स्वाध्याय से जीव व्यंजन लब्धि को प्राप्त करता है।

(c) योग प्रत्याख्यान से जीव किस गुण को प्राप्त करता है ?

उ. योग के प्रत्याख्यान से जीव अयोगी भाव को प्राप्त करता है, योगरहित जीव नए कर्म को नहीं बांधता है और पहले के बंधे हुए कर्म की निर्जरा (क्षय) कर देता है।

(d) ''एगग्ग-मण-संनिवेसणयाए णं चित्त-निरोहं करेइ'' इस वाक्य का हिन्दी अनुवाद कीजिए।

उ. मन को एकाग्रता में स्थापित करने से चित वृत्ति निरोध कर लेता है।

(e) ''संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ'' का अर्थ लिखिए।

उ. संयम से अनाश्रवपन (आते हुए कर्मों के निरोध) को प्राप्त करता है।

(f) प्रतिक्रमण से जीव किस गुण की प्राप्ति करता है ?

उ. प्रतिक्रमण से जीव (स्वीकृत) व्रतों के छिद्रों को ढाँकता है, व्रत के छिद्रों को ढाँकने वाला जीव पुनः आश्रवों को रोक देता है, चारित्र पर आये धब्बे मिटा देता है। अष्ट प्रवचन माताओं में वह उपयोगवान् (सावधान) होता है। फिर पृथक्त्व से रहित और सम्यक् प्रकार से प्रणिहित-समाधियुक्त होकर संयममार्ग में विचरता है।

(g) सामायिक से जीव किस गुण की प्राप्ति करता है ?

उ. जीव सामायिक से सावद्य योगों से विरति प्राप्त कर लेता है।

(h) ईर्यापथ आश्रव किसे कहते हैं ?

उ. कषाय रहित आत्मा के योग को ईर्यापथ आश्रव कहते हैं।

(i) पहले गुणस्थान में बन्ध योग्य प्रकृतियों में किन-किन प्रकृतियों का बंध नहीं होता है ?

उ. तीर्थंकर और आहारकद्विक (आहारक शरीर, आहारक अंगोपांग नामकर्म)का बंध नहीं होता।

(j) अबंध किसे कहते हैं ?

उ. अमुक गुणस्थान में कर्म का बंध नहीं हो किन्तु आगे हो तो वह अबंध कहलाता है।

(k) उदीरणा किसे कहते हैं ?

उ. कर्मदलिकों को प्रयत्न विशेष से खींचकर नियत समय से पहले ही उदयावलिका में लाकर उनके शुभाशुभ फलों को भोगना उदीरणा है।

(l) स्थानकवासी किसे कहते हैं ?

उ. शांत, एकांत और आगमवर्णित दोषों से रहित शुद्ध स्थान में धार्मिक क्रियाएँ करने से और वहाँ निवास करने से स्थानकवासी कहे जाते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **12x3 = (36)**

(a) हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

आलोयणाए णं माया-नियाण मिच्छादंसण सल्लाणं मोक्खमग्ग-विग्घाणं अणंत संसार वद्धणाणं उद्धरणं करेइ। उज्जुभावं च जणयइ। उज्जुभाव-पडिवन्ने य णं जीवे अमाई इत्थीवेय-नपुंसगवेयं च न बंधइ।

उ. आलोचना से जीव मोक्ष मार्ग में विध्न डालने वाले और अनन्त संसार को बढ़ाने वाले माया, निदान और मिथ्यादर्शन रूप शल्यों को निकाल फेंकता है और ऋजुभाव (सरलता) को प्राप्त होता है। ऋजुभाव को प्राप्त जीव मायारहित होता है। अतः वह स्त्रीवेद और नपुंसकवेद का बंध नहीं करता।

(b) हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

सहाय-पच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ। एगीभावभूए वि य णं जीवे एगग्गं भावमाणे अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ।

उ. सहाय के त्याग से जीव एकीभाव को प्राप्त होता है और एकीभाव को प्राप्त जीव एकत्व की भावना करता हुआ अल्प शब्द वाला, वाक्कलह से रहित, अल्प कलह (झगड़े-टन्टे रहित) वाला, अल्प कषाय वाला, अल्प तु-तु-मैं-मैं वाला होकर प्रधान संयमवान् , संवर प्रधान और समाधि युक्त भी होता है।

(c) हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

दंसण-संपन्नयाए णं भव मिच्छत्तं छेयणं करेइ। परं न विज्झायइ। परं अविज्झाएमाणे अणुत्तरेणं नाण-दंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ।

उ. दर्शन सम्पन्नता से जीव संसार के हेतुभूत मिथ्यात्व का छेदन करता है। उत्तर काल में सम्यक्त्व का प्रकाश बुझता नहीं है। फिर वह अनुत्तर (श्रेष्ठ) दर्शन से आत्मा को संयोजित करता (जोड़ता हुआ) तथा सम्यक् प्रकार से भावित करता हुआ विचरण करता है।

(d) ''जगत्काय स्वभावौ च संवेग वैराग्यार्थम्'' इस सूत्र का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ. संवेग तथा वैराग्य के लिए जगत् के स्वभाव एवं शरीर के स्वरूप का चिन्तन करना चाहिए, क्योंकि संवेग व वैराग्य से ही अहिंसादि व्रतों के पालन में दृढ़ता एवं उत्साह आता है।

(e) निम्नलिखित शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-

उ. आवश्यकापरिहाणि — सामायिक आदि छह आवश्यक को भाव से न छोड़ना।

दर्शन विशुद्धि — वीतरागकथित तत्त्वों में दृढश्रद्धा व रूचि।

साधु-समाधि — साधु के संयम-मार्ग में आये उपसर्गों को दूर कर समाधि पहुँचाना।

(f) अकाम निर्जरा एवं बालतप में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उ. पराधीनतावश न चाहते हुए भी जिसमें भोजन, काम-भोग एवं क्रोधादि का त्याग होता है, वह अकाम

निर्जरा कहलाती है। जबकि आत्मशुद्धि का लक्ष्य न रखकर, भौतिक सिद्धि हेतु अज्ञानपूर्वक किया जाने वाला तप 'बालतप' कहलाता है।

(g) **उदीरणा के लिए कौनसी तीन बातें होनी अनिवार्य है ?**

उ. 1.उदीरणा योग्य कर्म-प्रकृति का विपाकोदय चालू हो।
2.उस कर्म-प्रकृति की स्थिति एक आवलिका से अधिक हो।
3.योगों की प्रवृत्ति विद्यमान हो।

(h) **सत्ता किसे कहते हैं ? इसके दो भेदों को समझाइए।**

उ. कोई भी कर्म जिस समय बँधता है या संक्रमित होता है, उसी समय से सत्ता आ जाती है। सत्ता के दो भेद हैं– (1) सद्भाव सत्ता, (2) सम्भव सत्ता।
सद्भाव सत्ता– अमुक समय में प्रकृतियों की सत्ता का विद्यमान रहना, सद्भाव सत्ता है।
सम्भव सत्ता– अमुक समय में प्रकृतियों की सत्ता का विद्यमान नहीं रहना, किन्तु भविष्य में उस सत्ता की सम्भावना होना, सम्भव सत्ता है।

(i) **स्थानकवासी परम्परा की कोई चार मौलिक मान्यताओं का उल्लेख कीजिए।**

उ. **1. 32 आगम ही प्रमाण ग्रन्थ है। 2. सावद्य योग से विरत ही धर्म तीर्थ है।**
3. सर्व सावद्य योग से विरत ही वंदनीय पूजनीय होता है।
4. जड़ पदार्थों में भगवद्दशा तो दूर सावद्य योग के त्याग का आरोपण भी संभव नहीं।
5. 5 पद भाव की निक्षेप की अपेक्षा ही है। 6. मुखवस्त्रिका।
7. स्थानकवासी परम्परा में जादू, टोना, यन्त्र, मन्त्र, आडम्बर, नित नये विधानों का प्रचलन, थोथे चमत्कारों एवं भौतिक प्रलोभनों को कोई स्थान नहीं है।
8.स्वाध्याय, ध्यान, चिन्तन, मनन, स्तवन, आत्म-रमणरूपी भाव पूजा ही महत्त्वपूर्ण है।
9.काल की बदली हुई परिस्थितियों में आगमसम्मत श्रमणाचार का पालन हो सकता है।
10.दया-भाव से गरीबों को दान देना पाप नहीं है, अपितु पुण्य का कारण है।
11.स्थानकवासी परम्परा सामायिक, स्वाध्याय और साधना पर विशेष रूप से आधारित है, मन्दिर आदि पर नहीं।

(j) **दिगम्बर परम्परा की उन तीन मान्यताओं का उल्लेख कीजिए जो श्वेताम्बर परम्परा से भिन्न हैं।**

उ. **1. दिगम्बर परम्परा आगम विलुप्त होना मानती है। श्वेताम्बर परम्परा पूर्ण रूप में आगमों को विलुप्त नहीं मानती।**
2. दिगम्बर परम्परा की ओर से मुनियों के नग्न रहने के पक्ष में है, श्वेताम्बर परम्परा में मुनियों के लिए वस्त्र, पात्र,मुखवस्त्रिका, रजोरहण आदि धार्मिक उपकरणों की आवश्यकता पर बल दिया गया है।
3.दिगम्बर परम्परा एकान्ततः जिनकल्प का, नग्नत्व का ही विधान मानते हैं। श्वेताम्बर परम्परा जम्बू स्वामी के मोक्षगमन के साथ जिनकल्प का विच्छेद मानती है।
4.दिगम्बर-मूर्त्ति आभूषण से रहित व बन्द आँखों वाली होती है, जबकि श्वेताम्बर-मूर्त्ति आभूषण से युक्त एवं खुली आँखों वाली होती है।

(k) **निम्नलिखित वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए-**

उ. **1. मैं बालक को फल देता हूँ- अहं बालस्स फलं दामि।**
2. राजा शत्रु पर क्रोध करता है- नरिंदो अरिणाय कोहइ।
3. वीतराग को नमस्कार हो- वीयरागाय नमो।

(l) **निम्न वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए-**

उ. **1. समाहिणा सुहं लहीअ- समाधि से सुख प्राप्त किया।**
2. बाला समणाय भोयणं दाहिइ- लड़की श्रमण को भोजन देगी।
3. मुणी समाहिं रमीअ- मुनियों ने समाधि में रमण किया।